Vastuland.com
Info@vastuland.com
Nagpur : : Mumbai : : Indore : : Jabalpur : : Bilaspur : : Bhopal
Vastu land
The Land Bank
An ISO 9001:2000 Certified Company

अंतर्राष्ट्रीय मानचित्र में आएगा अचानकमार

अचानकमार टाइगर रिजर्व एवं बायोस्फियर को दुनिया को मानचित्र में लाने की कवायद शुरू कर दी गई है।

भास्कर न्यूज | बिलासपुर.

संचालक अचानकमार - अमरकंटक बायोस्फिर रिजर्व ने ट्रापिल फारेस्ट इंस्टीट्यूट जबलपुर 'टीएफआई' के साथ मिलकर प्रस्ताव इंटरनेशनल यूनियन आफ कंजरवेशन आफ फारेस्ट 'ईयूसीएन' को भेजा है।

फारेस्ट कंजरवेशन पर दिल्ली में पिछले दिनों हुई बैठक में इस बात पर जोर दिया गया कि नए टाइगर रिजर्व एवं बायोस्फियर रिजर्व को दुनिया के मानचित्र में लाने का प्रयास किया जाए। इस संबंध में बैठक में उपस्थित टाइगर रिजर्व एवं बायोस्फियर रिजर्व के क्षेत्रीय संचालकों को इस संबंध में क्षेत्र का विस्तृत ब्यौरा देते हुए प्रस्ताव बनाने के निर्देश दिए गए। इसका पालन करते हुए अचानकमार टाइगर रिजर्व के 914 वर्ग किलोमीटर सहित बायोस्फियर के कुल 2800 वर्ग किलोमीटर एरिया का प्रस्ताव बनाकर भेजा गया है। इसकी प्रक्रिया चल रही है। ईयूएनसी से स्वीकृति मिलने के पश्चात इन क्षेत्रों को अंतराष्ट्रीय मानचित्र में स्थान मिल जाएगा। इसके बाद हर स्तर पर होने वाली चर्चा में जिले का अचानकमार भी आ जाएगा।

टाइगर रिजर्व एरिया में इस वर्ष जिन कार्यों को किया जाना है उनमें प्रमुख रूप से क्षेत्र को पर्यटकों के लिए बनाना है। कोर एरिया के लिए जो योजना बनाई गई है। उसमें सबसे पहले वन्यप्राणियों वाले क्षेत्रों को चिह्नांकित कर वहां पर उनके खानपान के लिए उपयुक्त पेड़-पौधे लगवाए जाएंगे। नए चारागाह तैयार किए जाएंगे ताकि शाकाहारी वन्यप्राणियों की संख्या में इजाफा हो। इससे मांसाहारी वन्यप्राणियों को भोजन के लिए ज्यादा भटकना नहीं पड़ेगा। जो गांव कोर एरिया से हटाए जा रहे हैं वे पूरी तरह से चारागाह के रूप में विकसित किए जाएंगे।

गैर पारंपरिक ऊर्जा को बढ़ावा: टाइगर रिजर्व एरिया के बफर जोन में रहने वाले ग्रामीणों की निर्भरता को जंगल से कम करने के लिए गैर पारंपरिक उर्जा के स्त्रोत उपलब्ध कराए जाएंगे इसमें गैस आधारित इंधन को प्राथमिकता होगी। साथ ही यह प्रयास किए जाएंगे कि बफर जोन में रहने वालों के पास पशुओं की तादात भी ज्यादा न हो।

मैदानी अमले को प्रशिक्षण: शाकाहारी वन्यप्राणियों को हरी घास के अलावा कौन-कौन से फल या किन पौधों की पत्तियां पसंद हैं इसकी जानकारी आमतौर पर ज्यादा लोगों को नहीं होती है। इसलिए वन विभाग के मैदानी अमले को कान्हा और बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान में भेजकर प्रशिक्षण दिलाया जाएगा।

वन्यप्राणी प्रबंधन शाला: राज्य के वनकर्मियों को प्रशिक्षण के लिए राज्य में एक वन्यप्राणी प्रबंधन शाला प्रारंभ करने की तैयारी चल रही है। ये शाला वर्तमान में राज्य में स्थित वन विभाग के सक्ती, महासमुंद और जगदलपुर में संचालित वनरक्षक प्रशिक्षण शाला में से एक को वन्यप्राणी प्रबंधन शाला में परिवर्तित किया जाएगा।

24 घंटे चलेंगे वायरलेस: टाइगर रिजर्व एरिया में पदस्थ मैदानी अमले, कार्यालयीन स्टाफ व अधिकारी सभी जल्द ही वायरलेस के लैस होंगे। इस क्षेत्र में वायरलेस 24 घंटे काम करे इसके लिए कोटा, लमनी, अतरिया, राजक और जकड़बांधा में वायरलेस टावर लगाए जा चुके हैं। यह शीघ्र ही काम करने लगेगा।

बनेंगे एंटी पोचिंग कैंप: टाइगर रिजर्व एरिया में दो तीन स्थानों पर सर्वसुविधायुक्त एंटी पोचिंग कैंप बनाए जाएंगे। वहां पर तैनात कर्मियों को सुविधा संपन्न रखा जाएगा साथ ही एक्स आर्मीमेन भी वहां तैनात किए जाएंगे।

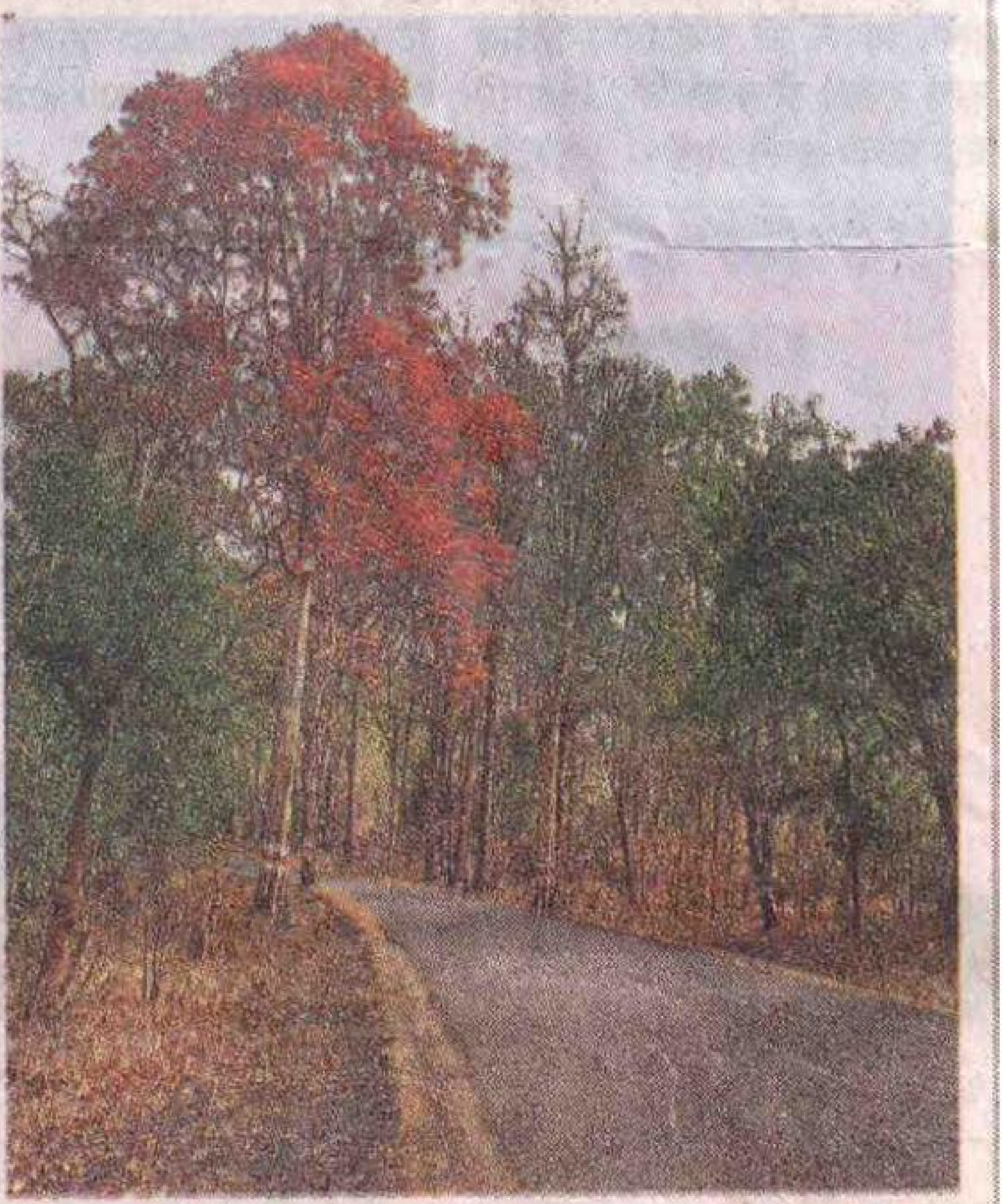

दो स्नीफर डाग आएंगे

टाइगर रिजर्व एरिया में शिकार रोकने या शिकार की पहचान के लिए दो स्नीफर डाग मंगाए जा रहे हैं। इन्हें समय-समय पर टाइगर रिजर्व एरिया के सभी बेरियरों में रखा जाएगा। इस डाग की खासियत यह है कि ये दो से ढाई फिट गड्ढे में गाड़े गए चमड़े की गंध को सूंघकर उसकी स्थिति बता सकता है। इस डाग से बेरियर से गुजरने वाली गाड़ियों व पर्यटकों व अन्य लोगों के सामान की जांच कराई जाएगी।

जानकारी भेजी गई

टाइगर रिजर्व एवं बायोस्फियर रिजर्व को अंतरराष्ट्रीय मानचित्र में लाने संबंधी जो जानकारी मांगी गई थी वह भेजी जा चुकी है। ईयूसीएन संस्था ने आगे की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी है।

एसएसडी बड़गैया,
प्रभारी संचालक अचानकमार टाइगर रिजर्व